Eklavya University
Damoh (M.P.)

Bachelor of Arts

(B.A. Semester – I&II)

Jain and Prakrit Studies

Curriculum

(2023-2024)

Bachelor of Arts - B.A. Jain and Prakrit Studies Semester I&II

VISION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

एकलव्य विश्वविद्यालय सीखने के माध्यम से जीवन और समाज के उन्नयन हेतु संकल्पित है।

MISSION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

- मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा आदर्श जीवन, आजीविका और उद्योग को पोषित करना।
- अनुसंधान और विषय के गूढ़ ज्ञान हेतु शिक्षा को व्यावहारिक बनाना।
- सामाजिक एवं तकनीकी कौशल के माध्यम से छात्रों को रोजगार हेतु तैयार करना।
- पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली में निहित ज्ञान की समग्र शिक्षा प्रदान कर छात्रों को उन्नत जीवन एवं रोजगार के लिए तैयार करना।
- अनुसंधान और रचनात्मक परीक्षण के माध्यम से ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना।
- शिक्षा; अनुसंधान और नवाचारों में उत्कृष्टता एवं प्रबंधन के लिए प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में लाना।
- छात्रों में व्यवहारिक एवं नैतिक शिक्षा के माध्यम से समस्या समाधान कौशल, सामुदायिक नेतृत्व कौशल एवं सामूहिक सामाजिक सेवा कार्य के लिए प्रतिबद्ध करना।
- समान अवसर एवं रोजगार को दृष्टि में रखकर छात्रों को आर्थिक सशक्तीकरण की ओर अग्रसर करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के माध्यम से व्यक्ति की जीवन शैली और पद्धति को समुन्नत करना।

VISION STATEMENT OF DEPARTMENT

- शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता के द्वारा मानव जीवन को उन्नत करने हेतु समर्पित।

MISSION STATEMENT OF DEPARTMENT

- जैन एवं प्राकृत भाषा की शिक्षा में उत्कृष्टता एवं विविधता में वृद्धि करना।
- जैन एवं प्राकृत के प्राचीन, मध्यकालीन और अन्य ज्ञान स्रोतों को सभी के लिए सुलभ कराना।
- जैन एवं प्राकृत एवं प्राच्य विद्याओं को समयानुकूलन के साथ प्रासंगिक बनाना।

PROGRAMME EDUCATIONAL OBJECTIVES (PEOs)

- जैन एवं प्राकृत विषय में स्नातक (बी.ए./शास्त्री) के उपरान्त छात्रों को जैन एवं प्राकृत में विशिष्ट अध्ययन एवं शोध के लिए अवसर प्राप्त होंगे।
- जैन एवं प्राकृत भाषा के विशिष्ट ज्ञान से महत्वपूर्ण एवं तुलनात्मक शोध को प्रोत्साहन मिलेगा।
- जैन एवं प्राकृत भाषा में किया गया अध्ययन एवं स्वयं के द्वारा किये गए शोध – अन्वेषण से स्वयं के बौद्धिक स्तर को राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय और सामाजिक – आध्यात्मिक पटल पर स्थापित कर सकेगा।

PROGRAMME OUTCOMES (POs)

- जैन एवं प्राकृत भाषा में स्नातक (बी.ए.) अध्ययन से छात्रों में समाज, संस्कृति, इतिहास, धर्म, दर्शन, विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान अर्जित कर सामाजिक एवं मानव समस्याओं के समाधान करने हेतु संवेदनशीलता तथा समझ विकसित होगी।
- जैन एवं प्राकृत भाषा में स्नातक होने से छात्रों में सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक वैचारिक और दार्शनिक परंपरा तथा उनसे संबंधित विषयों की सोच विकसित एवं पल्लवित होगी।
- यह कार्यक्रम छात्रों में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने एवं शोध कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगा।
- जैन एवं प्राकृत भाषा में स्नातक करने के उपरान्त छात्र एम.ए., एम.फिल, पी–एच.डी. आदि उपाधियां प्राप्त कर उस ज्ञान से विशिष्ट मुद्दों का समाधान एवं नवाचार कर सकेगें।
- जैन एवं प्राकृत भाषा में स्नातक अध्ययन से छात्रों में वेद, पुराण, आगम, काव्य, नाट्यशास्त्र, व्याकरण, पाण्डुलिपि–पुरालिपि एवं संस्कृत की सभी विधाओं के साहित्य के पठन–पाठन, सम्भाषण एवं संपादन कला का विकास होगा।

PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PSOs)

- जैन एवं प्राकृत भाषा का पर्याप्त ज्ञान अर्जित करना।
- जैन एवं प्राकृत भाषा के साथ पालि भाषा में रचित ग्रन्थों एवं आगम ग्रन्थों को समझना।
- जैन एवं प्राकृत व्याकरण, आगम साहित्य का विशिष्ट अध्ययन करना।
- प्राचीन भारतीय दर्शन– चार्वाक, जैन, बौद्ध एवं सांख्यादि षड्दर्शनों के विभिन्न पक्षों में शिक्षण और अनुसंधान के लिए दक्षता और कौशल का विकास करना।
- जैन एवं प्राकृत भाषा में सम्भाषण कौशल, ग्रन्थ संपादन कौशल, लेखन–वाचन–श्रवण आदि विधाओं में पारंगत होना।

आशीष जैन

Ashishray

Neelu

Course code	Prakrit agam and Vyakaran (Paper 1) / Major / Minor	L	T	P	C
23A1JAPRIT	प्राकृत आगम और व्याकरण प्रश्न–पत्र – 1 / मेजर/माईनर	06	0	0	06
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
	90 Hours	60			
Semester – I					

Level – 05

Course Objectives: (CO)

1. विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
2. विश्व की धरोहर के रूप में घोषित ऋग्वेद सहित संपूर्ण वैदिक साहित्य की ज्ञान महिमा से छात्र लाभान्वित होंगे।
3. व्याकरण के माध्यम से संस्कृत भाषा साहित्य की संरचना की समझ में सहायक।
4. छात्र में प्राकृत लेखन और अनुवाद की कला का विकास होगा।

Course Learning Outcome: (CLO)

1. प्राकृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
2. प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा मिलेगी।
3. प्राकृत एवं आगम की विधाओं से छात्र सुपरिचित हो सकेगा।
4. आगम साहित्य की महिमा से अवगत होकर छात्र में आगम साहित्य के प्रति समर्पण की भावना विकसित होगी।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. छात्र के धार्मिक और आध्यात्मिक व मनोवैज्ञानिक विकास में सहयोगी सिद्ध होगा।
2. वाक्य निर्माण व प्रयोग का ज्ञान।
3. प्राकृत भाषा में अनुवाद कला एवं सम्भाषण कौशल का विकास होगा।
4. छात्रों में भाषा कौशल एवं अनुकूलन की सोच विकसित होना।0

Unit – 1 प्राकृत भाषा एवं आगम साहित्य का परिचय — 15

1. प्राकृत भाषा का परिचय : प्राकृत भाषा का स्वरूप एवं महत्व, छान्दस् प्राकृत एवं कथ्य प्राकृत का परिचय एवं विशिष्टताएं।
2. आगम : स्वरूप, लक्षण, भेद, रचनाकाल।
3. आगम साहित्य : अंग, उपांग, मूलसूत्र, छेदसूत्र, प्रकीर्णक, चूलिका, कषायपाडुड, षट्खण्डागम का सामान्य परिचय।
4. प्राकृत के प्रसिद्ध आचार्यो का परिचयः धरसेन, गुणधर, पुष्पदन्त, भूतबली, कुन्दकुन्द वट्टकेर, शिवार्य, कार्तिकेय, नेमिचन्द्र, देवसेन, वसुनन्दि।

Unit – 2 आगम सूत्रोंः (गाथाओं) व्याख्या, समीक्षा एवं व्याकरणिक टिप्पणियां — 15

1. प्रवचनसार (गाथा1–50)
2. आचारांग – प्रथम अध्ययन
3. कषायपाडुड (गाथा 1–20)

आशीष जैन

Ashshay

Unit – 3 शब्दरूप, धातुरूप एवं लकार	**15**
1. शब्दरूप – राम, कवि, भानु, पितृ, लता, नदी, वधू, मातृ, फल, वारि, आत्मन्, वाक्, सर्व, तत्, यत्, इदम्, अस्मत्, तथा युष्मत् 2. धातुरूप – 3. पठ्(पढ), भू (हो), श्रु (सोच्छ), रूद् (रोच्छ), वद् (वोच्छ), दृश् (दच्छ), मुच् (मोच्छ), भुज् (भुज्) परिचय – धातु रूप– (परस्मै पदी एवं आत्मनेपदी, भविष्यत् काल, विधि तथा आज्ञावाची धातु, प्रत्यय, क्रियातिपत्ति।)	
Unit – 4 संज्ञा, सन्धि, एवं विभक्ति प्रकरण	**15**
प्राकृत–बोध या प्राकृत प्रवेशिका (संज्ञा, सन्धि, एवं विभक्ति प्रकरण) सूत्रों की व्याख्या एवं प्रयोग	
Unit – 5 प्राकृत सम्भाषण एवं अनुवाद कौशल	**15**
(अ) प्राकृत सम्भाषण 1. प्राकृत सम्भाषणः आत्मपरिचय, विभक्ति प्रयोग, सर्वनाम शब्दों का प्रयोग (तत्, एतत्, किम् यत्–तीनों लिंग, एवं दो वचनों में)। अव्यय प्रयोग (अत्रयत्र–तत्र, कुत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, एकत्र, आम्, न, अद्य, श्वः, ह्यः परश्वः परह्यः, इन्दानीम्, पुरतः पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणत, उपरि, अधः, सम्यक्, अपि च, अतः, एवम्, इति, यदि–तर्हि, यथा–तथा, यदा–तदा, कदा, कति, किम्, कृतः, कथं, किमर्थम्, खलु। 2. कृदन्त प्रत्यय– क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्त, क्तवतु–प्रत्ययों का प्रयोग। 3. संख्या वाचक शब्द – एक से एक सौ तक। (ब) अनुवाद कौशल प्राकृत सम्भाषण एवं अनुवाद पर आधारित परियोजना कार्य / मौखिकी परीक्षा के आधार पर मूल्यांकन।	

सार बिंदु (की वर्ड)/टैगः वेद, संज्ञा, सन्धि, कारक, अनुवाद, अव्यय, सम्भाषण।		
# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		

Text Book(s) / Reference Books

1. "प्राकृत साहित्य का इतिहास ", जैन, डॉ. जगदीशचंद्र – चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961
2. "प्राकृत साहित्य की रूपरेखा", डागा डॉ. तारा – प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर
3. "प्राकृत रत्नाकर", जैन डॉ. प्रेमसुमन – प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोला, कर्नाटक
4. "प्राकृत भाषा और साहित्य", जैन, प्रो. ऋषभ चन्द्र फौजदार – निदेशक, प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, बिहार 2017
5. "प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास" शास्त्री, डॉ. नेमिचन्द्र – तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
6. "शौरसेनी प्राकृत व्याकरण", जैन डॉ. उदयचन्द्र – उदयपुर
7. जैन डॉ. महेन्द्र मनु – पाण्डुलिपि : सूचीकरण एवं सम्पादन – प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार)
8. "प्राकृत भाषाओं का व्याकरण", जोशी, प्रो. हेमचन्द्र – रिचर्ड पिशेल, हिन्दी अनुवाद, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना (बिहार)
9. "सिद्धान्त कौमुदी", जैन, मुनि रत्नचन्द्र – लाहौर ।

भाग द – अनुशंसित मूल्यांकन विधियां:

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियाँ: लिखित परीक्षा, सतत आन्तरिक मूल्याकन, साक्षात्कार विधि, वाग्यवहार विधि, वस्तुनिष्ट प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न निर्माण अधिकतम अकः 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंकः 40

विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंकः 60

आंतरिक मूल्यांकनः सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) : 40	क्लास टेस्ट असाइमेंट/ क्विज/ सेमीनार / प्रस्तुतीकरण/(प्रेजेंटेशन)	20 20 कुल अंकः 40
आकलनः विश्वविद्यालयीन परीक्षा : समय– 03.00 घंटे	अनुभाग(अ): पांच अति लघु प्रश्न अनुभाग(ब): पांच लघु प्रश्न अनुभाग(स): चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	01 X 05 = 05 03 X 05 = 15 10 X 04 = 40 कुल अंक 60
कोई टिप्पणी/सुझाव :		

आशीष जैन

Ashutosh

Nidhi

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञानप्राप्तये लक्ष्यसन्धानम्

Course code	Prakrit Kavya Sahitya Paper- II/Major/Minor	L	T	P	C
23AIJAPR2T	प्राकृत काव्य साहित्य (प्रश्न–पत्र 2)/मेजर/माईनर	06	0	0	06
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
	90 Hours	60			

Semester – II

Level – 05

Course Objectives: (CO)

- नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक।
- रामायण की सार्वकालिक व सार्वजनिक उपादेयता के साथ राष्ट्र निर्माण में सहायक।
- भारतीय संस्कृति के अवबोध एवं महापुरूषों के आदर्श से छात्रों को परिचित कराना।
- प्राचीन सामाजिक संरचना एवं उत्कृष्ट समाज का ज्ञान।

Course Learning Outcome: (CLO)

- प्राकृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- प्राकृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- आर्षकाव्य एवं लौकिक काव्य के अध्ययन के प्रति जागरूक होना।
- रंग मंचीय कौशल के विकास व लेखन की कला की दृष्टि से उपादेय।
- छात्र में कथा लेखन की शैली का विकास।
- उपदेशात्मक काव्य से नैतिक मूल्यों का विकास।

Unit	Hours
Unit – 1 पउमचरियं (जैन रामायण–विमल सूरि)	15
सुत्तविहाणं – प्रथम, सर्ग (सम्पूर्ण) पठितांश से व्याख्या तथा पउमचरियं के सामान्य परिचय पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।	
Unit – 2 सेतुबंध (प्रवरसेन)	15
प्रथम आश्वास (सम्पूर्ण) पठितांश से व्याख्या तथा सेतुबंध के सामान्य परिचय संबंधी समीक्षात्मक प्रश्न।	
Unit – 3 कंसवहो (रामपाणिवाद)	15
प्रथम सर्ग (सम्पूर्ण) – पठितांश से व्याख्या तथा कंसवहो के सामान्य परिचय से संबंधित समालोचनात्मक प्रश्न।	
Unit – 4 मृच्छकटिकम्	15
प्रथम अंक–पठितांश प्राकृत अंश से व्याख्या तथा सम्पूर्ण नाटक पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न।	
Unit – 5 वज्जालग्गं –	15
सज्जन, दुर्जन, मित्र, स्नेह, नीति, वज्जा का पठितांश पर आधारित उपदेशात्मक प्रश्न। णीदी–संगहो–लोग–णीदी (1 से 100 पद्य) अनुवाद/प्रश्न।	

आशीष जैन

Ashutosh

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		
Text Book(s) / Reference Books		
1. मृच्छकटिकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या सहित, मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली, 1969। 2. प्राकृत विमर्श – सरयू प्रसाद अग्रवाल, प्रकाशन, लखनऊ विश्वविद्यालय। 3. पउमचरियं –विमलसूरि, प्राकृत ग्रन्थ परिषद, अहमदाबाद। 4. सेतुबन्ध – प्रवरसेन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। 5. कंसवहो – रामपाणिवाद, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, 2002। 6. वज्जालग्गं – जयवल्लभ, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी। 7. णीदी संगहो– आचार्य सुनील सागर, सुनील प्राकृत समग्र भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।		

भाग द – अनुशंसित मूल्यांकन विधिया

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियाँ: लिखित परीक्षा, सतत आन्तरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि, वाग्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लघुउत्तरीय प्रश्न निर्माण

अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक: 40

विश्वविद्यालय परीक्षा (UE) अंक : 60

आंतरिक मूल्यांकन : सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE): 40	क्लास टेस्ट असाइमेंट / क्विज / सेमीनार / प्रस्तुतीकरण / (प्रेजेंटेशन)	20 20 कुल अंक: 40
आकलन: विश्वविद्यालयीन परीक्षा : समय– 03.00 घंटे	अनुभाग(अ): पांच अति लघु प्रश्न अनुभाग(ब): पांच लघु प्रश्न अनुभाग(स): चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	01 X 05 = 05 03 X 05 = 15 10 X 04 = 40 कुल अंक 60
कोई टिप्पणी / सुझाव		

आशीष जैन

Ashish